नागार्जुन (30 जून 1911-5 नवंबर1998)

बिहार के मधुबनी में जन्मे जनकवि नागार्जुन हिन्दी और मैथिली के वामपन्थी कवि व लेखक के रूप में ख्यात हैं। अपने लेखन, राजनीतिक-सामाजिक काम और घुमक्कड़ी में उनके सरोकार हमेशा वंचित तबके के पक्ष में रहें हैं। 'अकाल और उसके बाद' उनकी चर्चित कविताओं में से एक है। इसे उत्तर-भारत में आम लोग खूब पसन्द करते हैं।

parag
AN INITIATIVE OF TATA TRUSTS

एकलव्य

मूल्यः ₹ 00.00

9 789381 337363

# अकाल और उसके बाद

नागार्जुन

चित्रांकनः कैरन हेडॉक

एकलव्य

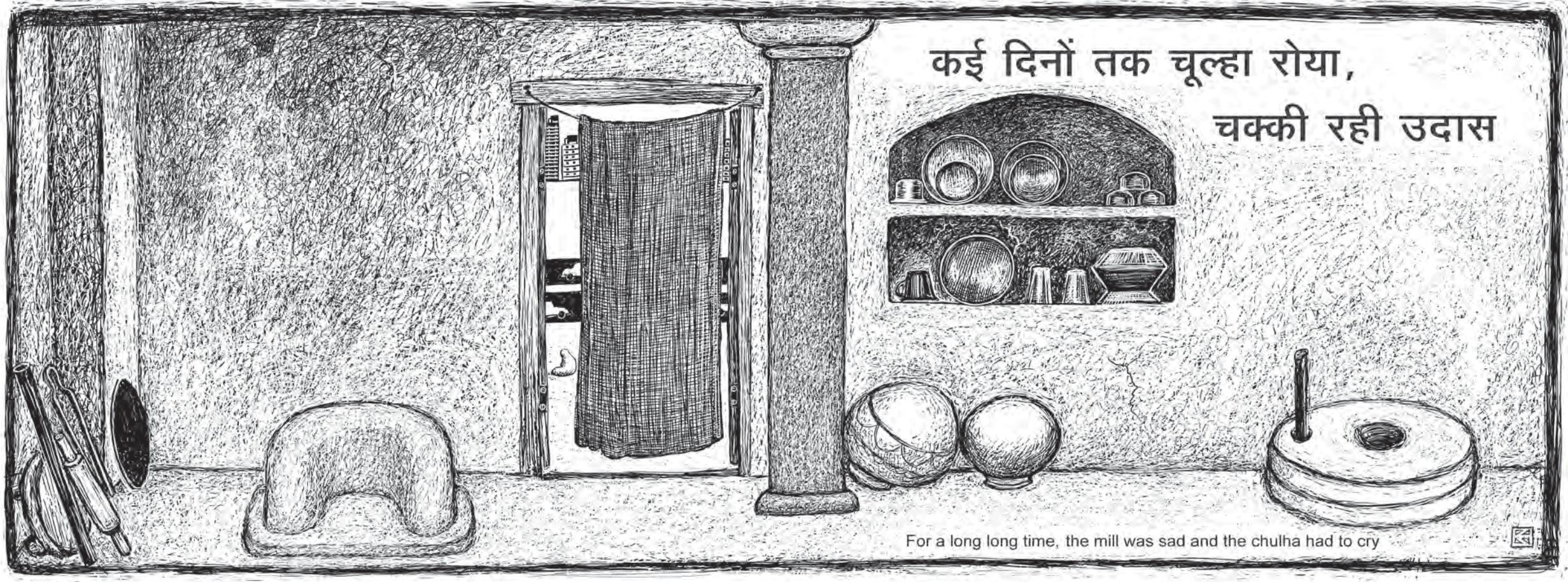


For a long long time, the mill was sad and the chulha had to cry

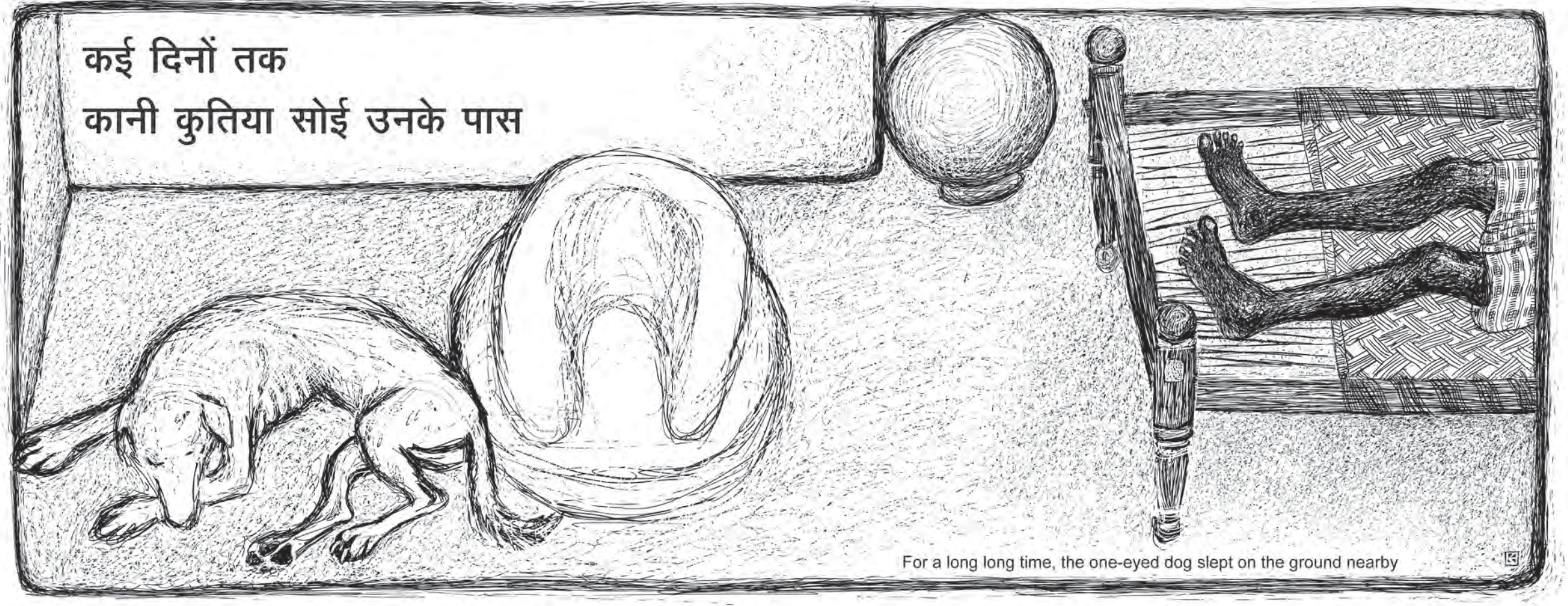


For a long long time, the one-eyed dog slept on the ground nearby

कई दिनों तक
लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त

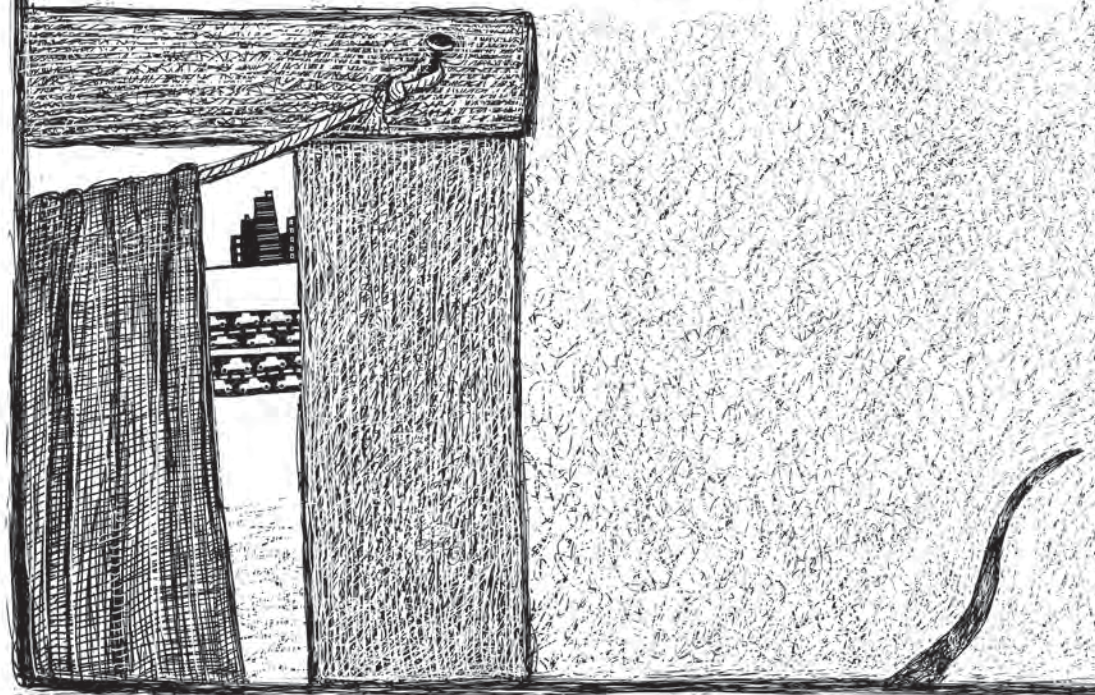

For a long long time, the lizards ran in fear across the wall

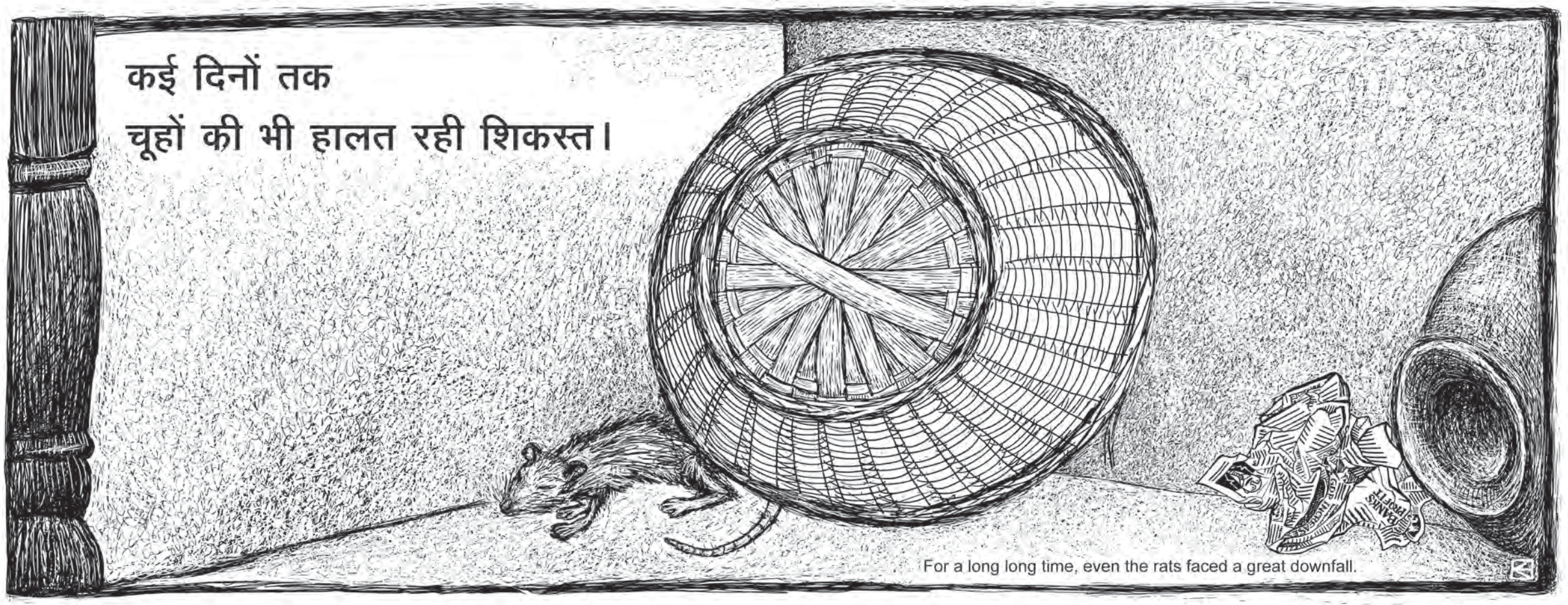
कई दिनों तक
चूहों की भी हालत रही शिकस्त।
For a long long time, even the rats faced a great downfall.

दाने आए घर के अन्दर
कई दिनों के बाद
Grain came into homes again, after a long long time

चमक उठी घर भर की आँखें
कई दिनों के बाद
The eyes of the whole house started to shine, after a long long time

धुआँ उठा आँगन से ऊपर
कई दिनों के बाद
Smoke rose up from the courtyard then, after a long long time

The crow scratched its feathers and felt so fine, after a long long time.

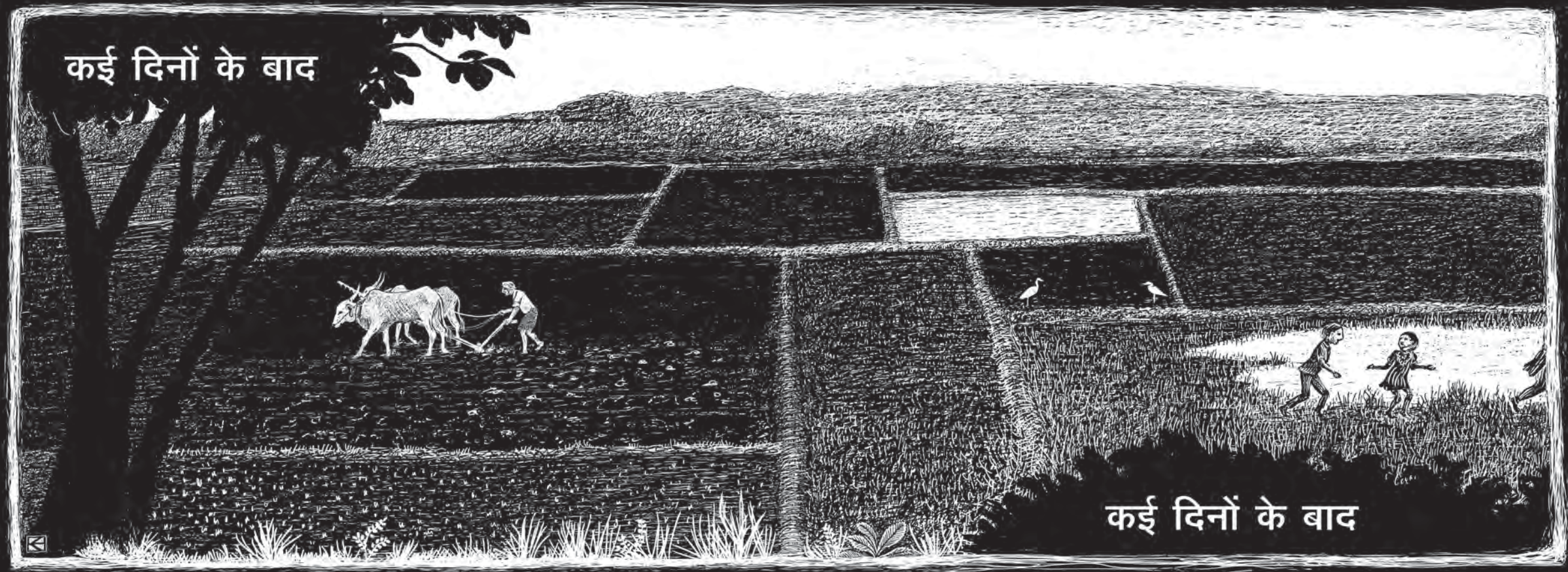
कई दिनों के बाद
कई दिनों के बाद

**अकाल और उसके बाद /AKAL AUR USKE BAAD**

कविताः नागार्जुन

डिज़ाइन व चित्रः कैरन हेडॉक

कविताः शोभाकान्त मिश्र

इस कविता का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों हेतु मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में लेखक और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य से सम्पर्क करें।

चित्रः कैरन हेडॉक

इस कहानी का उपरोक्त के समान क्रिएटिव कॉमन्स लाइसेंस के तहत गैर-व्यावसायिक शैक्षिक उद्देश्यों हेतु मुफ्त वितरण के लिए उपयोग किया जा सकता है। ऐसा करते हुए मूल स्रोत के रूप में लेखक और प्रकाशक का ज़िक्र करना और उन्हें सूचित करना आवश्यक होगा। अन्य किसी भी प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य से सम्पर्क करें।

जून 2017/ 2000 प्रतियाँ

कागज़ः 140 gsm ब्राउन क्राफ्ट पेपर

पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट के वित्तीय सहयोग से विकसित

ISBN: 978-93-85236-28-0

मूल्यः ₹ 20.00

प्रकाशकः एकलव्य

ई-10, शंकर नगर बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर,

भोपाल - 462 016 (मप्र)फोनः +91 755 255 0976, 267 1017

www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रकः आर के सिक्युप्रिंट, प्रा. लि., भोपाल (मप्र) + 91 755 268 7589